31 जुलाई

BA Part I

रामायण का साहित्यिक महत्व

"मधुमयभणितीनां मार्गदर्शी महर्षिः" - भोजराजः

माधुर्ययुक्त पद्यों का मार्ग महाकवि वाल्मीकि ने प्रशस्तकर परवर्ती संस्कृत साहित्य को आलोकित किया है। भाव के अनुसार ~~अनुरूप~~ भाषा में परिवर्तन का आरम्भ ~~मन~~ इन्होंने किया (क) किसी घटना के निरूपण में कवि सरलता प्रदर्शित करते हैं-

"यामेव रात्रिं ते दूताः प्रविशन्ति स्म तां पुरीम्।
भरतेनापि तां रात्रिं स्वप्नो दृष्टोऽयमप्रियः॥"

(ख) उपदेश के प्रतिपादन में भी सरलता निरूपित होती है। यथा-

"मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव॥"

(ग) सुन्दरकाण्ड में हनुमान् लङ्का में ~~जब~~ चन्द्रोदय को अवलोकन करते हैं। यहाँ कवि उपमा के साथ अन्त्यानुप्रास का समन्वय करते हैं। उपमेय चन्द्र को उपमानों की माला से अलङ्कृत किया गया है। इसप्रकार मालोपमा अलङ्कार की प्रभा दर्शनीय है।

"शिलातलं प्राप्य यथा मृगेन्द्रो महारणं प्राप्य यथा गजेन्द्रः।
राज्यं समासाद्य यथा नरेन्द्रस्तथा प्रकाशो विरराज चन्द्रः॥"

(घ) किष्किन्धाकाण्ड में वर्षावर्णन के संदर्भ में कहा गया है- "वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।"
(रामायण 4/28/27)

रामायण के पात्रों का चिन्तन तथा विषय के अनुरूप भावों का निरूपण इस महाकाव्य की विशेषता है। हनुमान् का सुन्दरकाण्ड के प्रारम्भमें, सीताके अन्वेषण के क्रम में लङ्का के वैभव को अवलोकन करना तथा नारीदर्शन से उत्पन्न चिन्तन स्वयं में एक महाकाव्य है।
रामायण 5/4-13

महाकाव्य के ~~...~~ विशद वर्णन, उदात्त चिन्तन, विशिष्टपात्र तथा ~~विषय~~ ~~मनो~~ मनोहर विषयवस्तु रामायण को महाकाव्यों के विशालकोश के रूप में हमारे ~~समक्ष~~ सिद्ध करते हैं।